भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर (2023-2024)

कक्षा 10	**विषय – हिंदी (पाठ्यक्रम-ब)**	**Date of submission – 18-10-2023**
प्रश्न बैंक	**पाठ: अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले (निदा फ़ाज़ली)**	**Note: Pl. file in portfolio**

प्रश्न 1.बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

उत्तर-बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को इसलिए धकेल रहे थे कि ताकि वे समुद्र के किनारे की जमीन पर कब्ज़ा कर सकें और उस पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ीकर लोगों को बसा सकें। ऐसा करके वे पैसा कमाना चाहते थे।

प्रश्न 2.लेखक का घर किस शहर में था?

उत्तर-लेखक का घर पहले ग्वालियर में था परंतु बाद में वह मुंबई के वर्सोवा में रहने लगा।

प्रश्न 3.जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा है?

उत्तर-पहले जनसंख्या कम थी। लोगों के हिस्से में जमीन अधिक थी। वे बड़े-बड़े घरों और खुले में रहते थे। घर की तरह ही उनका दिल भी बड़ा हुआ करता था, परंतु जनसंख्या बढ़ने के साथ ही वे छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में रहने को विवश हो गए।

प्रश्न 4.कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

उत्तर-कबूतर के जोड़े ने रोशनदान में दो अंडे दिए थे। उनमें से एक को बिल्ली ने तोड़ दिया और दूसरा सँभाल कर रखते हुए माँ से टूट गया। अंडे टूट जाने के कारण कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

प्रश्न 5.अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उत्तर-अरब में नूह नाम के एक पैगंबर थे जिनका असली नाम लशकर था। वे अत्यंत दयालु और संवेदनशील थे। एक बार एक कुत्ते को उन्होंने दुत्कार दिया। उस कुत्ते का जवाब सुनकर वे बहुत दुखी हुए और उम्र भर पश्चाताप करते रहे। अपने करुणा भाव के कारण ही वे 'नूह' के नाम से याद किए जाते हैं।

प्रश्न 6.लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

उत्तर-लेखक की माँ पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं पेड़-पौधों के प्रति भी संवेदनशील थीं। वे सूरज छिपने के बाद पेड़ों के पत्ते तोड़ने से मना करती थी। उनका मानना था कि ऐसा करने पर पेड़ों को दुख होगा और वे रोते हुए बद्दुआ देते हैं।

प्रश्न 7. प्रकृति में आए असंतुलन को क्या परिणाम हुआ?

उत्तर-प्रकृति में आए असंतुलन का दुष्परिणाम बहुत ही भयंकर हुआ; जैसे-

1 विनाशकारी समुद्री तूफ़ान आने लगे। 2 अत्यधिक गरमी पड़ने लगी।

3 असमय बरसातें होने से जन-धन और फ़सलें क्षतिग्रस्त होने लगीं। 4 जलज़ले,सैलाब आने लगे ।

5 नए-नए रोग उत्पन्न हो गए, जिससे पशु-पक्षी असमय मरने लगे।

प्रश्न 8.लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक अनेक बदलाव देखे-

1 उसके देखते-देखते बहुत सारे पेड़ कट गए। 2 नई-नई बस्तियाँ बस गईं। 3 चौड़ी सड़कें बन गईं।

4 पशु-पक्षी शहर छोड़कर भाग गए। जो बच गए उन्होंने जैसे-तैसे यहाँ-वहाँ घोंसला बना लिया।

प्रश्न 9.डेरा डालने से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-डेरा डालने का आशय है-अपने रहने की व्यवस्था करना। जिस तरह मनुष्य जब कहीं बाहर जाता है तो अपने रहने का ठिकाना बनाता है। इसी प्रकार पक्षी भी रहने और अंडे देने तथा बच्चों की देखभाल के लिए डेरा डालते हैं।

दीर्घ प्रश्न

1. पाठ के अनुसार वनस्पति और जीव-जगत के बारे में लेखक की माँ के क्या विचार थे?

उत्तर - लेखक 'निदा फ़ाज़ली' बताते हैं कि उनकी माँ अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति की थीं। वनस्पति और जीव-जगत के बारे में वे अत्यंत संवेदनशील थीं। वे कहती थीं कि सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर पेड़ रोते हैं। संध्या-वंदन के समय फूलों को नहीं तोड़ना चाहिए, वे बद्दुआ देते हैं। दरिया पर जाओ तो उसे सलाम करो। ऐसा करने पर दरिया प्रसन्न होता है। कबूतर हज़रत मुहम्मद को अज़ीज़ हैं, उन्होंने उन्हें अपनी मज़ार के नीले गुंबद पर घोंसले बनाने की इजाज़त दे रखी है। अतः उन्हें सताना नहीं चाहिए। मुर्गे को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह तो मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है।

2. पाठ में बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या कुप्रभाव बताया गया है ? विस्तार से लिखिए।

उत्तर - बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जब-जब जगह की कमी हुई, तब-तब जंगलों को काटा गया। समुद्र-तट पर बड़ी-बड़ी बस्तियों को बनाया गया। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की गई, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन के दुष्परिणाम सामने आए। इसके परिणामस्वरूप मौसम-चक्र गड़बड़ा गया। गर्मी में अत्यधिक गर्मी पड़ने लगी। बेवक़्त वर्षा होने लगी, भूकंप, बाढ़ का ख़तरा बढ़ गया। प्रदूषण का ख़तरा बढ़ गया। नित नए रोग होने लगे। ये सभी बढ़ती आबादी के दुष्परिणाम हैं।

3. पाठ के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि दूसरों के दुख से दुखी होने वाले लोग अब कम मिलते हैं।

उत्तर - समय के साथ-साथ लोगों की सोच व व्यवहार में भी भारी बदलाव आ गया है। पहले मनुष्य जीव-जंतुओं और प्रकृति के प्रति इतना संवेदनशील था कि उसके दुख से दुखी हो उठता था। लेखक ने सुलेमान का उदाहरण देकर बताया है कि किस प्रकार चींटियों की रक्षा के लिए उन्होंने उन्हें अपने लश्कर से भयभीत न होने की बात कही। सुलेमान का यह कथन कि वे तो सभी के लिए मुहब्बत हैं, उनके हृदय की उदारता को ही दर्शाता है। इसी प्रकार लेखक ने शेख अयाज़ के पिता द्वारा एक च्योंटे को उसके घर वापस छोड़कर आने में भी जीव-जंतुओं के प्रति संवेदना को ही दिखाया है। नूह नाम के पैगंबर द्वारा अनजाने में एक कुत्ते की भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए उम्र भर रोते रहने में भी यही भाव झलकता है। लेखक की माँ द्वारा संध्या-समय पेड़-पौधों को न छूना, दरिया पर जाकर उसे प्रणाम करना, मुर्गे और कबूतर जैसे जीवों को न सताने की बात कहना, प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति उनके असीम स्नेह को ही दर्शाता है। परंतु अब प्रकृति के प्रति इतनी संवेदना रखने वाले लोग नज़र नहीं आते। तभी तो प्रकृति मनुष्य के हाथों का खिलौना बन गई है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ के कारण न केवल जंगलों को बेदर्दी से काटा है, वरन नदियों, नालों और समुद्रों तक की भूमि पर अतिक्रमण कर लिया है। न जाने कितने ही परिंदों-चरिंदों को बेघर कर दिया है। लेखक की पत्नी द्वारा कबूतरों के आशियाने की जगह जाली लगा देना दर्शाता है कि अब लोगों में पहले-सी भावुकता, संवेदनशीलता और सहृदयता नहीं रह गई है, जिसके कारण लोग दूसरे के दुख से दुखी होते थे। आजकल पहले-सी भावुकता तो कम ही लोगों में देखने को मिलती है।

4. "मिट्टी से मिट्टी मिले खो के सभी निशान" उक्ति के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर - लेखक मनुष्य को नश्वर शरीर पर घमंड न करने की सीख देना चाहते हैं । वे कहते हैं कि मनुष्य को अपने रंग, रूप आदि पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि अंत में यह शरीर अपनी सभी पहचान खो देता है तथा मिट्टी में मिलकर केवल मिट्टी बन जाता है ।

5. पाठ में लेखक ने प्रेम और अपनत्व की भावना के अभाव के क्या कारण बताए हैं?

उत्तर- लेखक के अनुसार प्रेम और अपनत्व की भावना के अभाव के मुख्य कारण हैं - समय के साथ-साथ मनुष्य की सोच एवं व्यवहार में बदलाव । पहले मनुष्य संयुक्त परिवारों में बड़े-बड़े घर-आँगनों में रहता था, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में ज़िंदगी सिमट गई है । संयुक्त परिवार के त्याग, प्रेम, सौहार्द जैसे भाव एकल परिवार के तनाव, स्वार्थ, ईर्ष्या, अकेलेपन में बदल गए हैं । बदलते जीवन-मूल्य अपने से अपनों को छीनते जा रहे हैं । दूसरी तरफ़ प्रकृति, जिसे माँ माना जाता है, अब मनुष्य के हाथों का खिलौना बन गई है । पहले मनुष्य के सीने में दिल धड़कता था, वह दूसरों के दुख से दुखी होता था, सभी जीवों के लिए उसके मन में प्यार था, अब उसी मनुष्य ने पशु-पक्षियों का आसरा छीनकर उन्हें बेघर कर दिया है । स्वार्थ से घिरा मनुष्य मशीनों के बीच मशीन बनकर रह गया है ।

6. "मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति प्राकृतिक असंतुलन का मुख्य कारण है"- पाठ के आधार पर कथन की समीक्षा कीजिए ।

उत्तर - इस कथन में लेखक ने प्रकृति के अंधाधुंध तरीके से किए जा रहे दोहन के लिए मनुष्य को सचेत किया है । उन्होंने मनुष्य को सावधान रहने की सीख देते हुए कहा है कि प्रकृति एक हद तक अपना शोषण सहती है, इसके बाद उसकी सहनशक्ति जवाब दे जाती है । जब ऐसा होता है, तब वह भावनाओं और संवेदनाओं से अलग होकर अपने रौद्र रूप में सामने आ जाती है । इसके लिए लेखक ने मुंबई में समुद्र के गुस्से का उदाहरण दिया है । जब सहनशीलता की हद हो गई, तब समुद्र ने गुस्से में आकर इतना भयावना रूप धारण कर लिया कि मुंबई वाले त्राहि-त्राहि कर उठे । इस कथन के द्वारा यही संदेश दिया गया है कि मनुष्य प्रकृति का अनुचित दोहन न करे, वरना प्रकृति द्वारा रौद्र रूप में भरकर किया गया वार उससे झेला नहीं जाएगा ।

7. लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर - उस खिड़की से कबूतर घर के अंदर आ जाते थे । वे घर के अंदर एक ही दिन में कई-कई बार आ जाते थे । वे वहाँ रखी चीज़ों को तोड़ जाते थे, किताबों को गंदा कर जाते थे । रोज़-रोज़ की इस परेशानी से बचने के लिए लेखक की पत्नी ने जाली लगवाकर कबूतरों के घर में आने पर रोक लगाई ।

8. शेख अयाज़ के पिता भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए? इससे उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता का पता चलता है ?

उत्तर - एक बार शेख अयाज़ के पिता कुएँ पर नहाने गए थे । वे आकर खाना खाने बैठे ही थे कि उन्होंने अपनी बाँह पर एक काला च्योंटा रेंगता देखा । शेख अयाज़ के पिता भावुक हो उठे और अपना खाना छोड़कर

च्योंटे को कुएँ पर उसके घर वापस छोड़ने गए । इससे उनकी भावुकता, जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम-भावना का पता चलता है ।

9. लेखक की माँ ने प्रायश्चित क्यों किया और कैसे किया?

उत्तर - बढ़ती हुई आबादी के कारण बस्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है । जंगलों को अंधाधुंध तरीके से काटा जा रहा है । परिंदों-चरिंदों का घर छिन गया है । इसलिए पक्षियों ने लोगों के घरों में डेरा डालना शुरू कर दिया है । इसी क्रम में दो कबूतरों ने लेखक के घर में घोंसला बना लिया था । उस घोंसले में कबूतरों ने दो अंडे दिए थे । उन अंडों में से एक अंडे को बिल्ली ने गिराकर तोड़ दिया था । दूसरे अंडे को बिल्ली से बचाने के लिए लेखक की माँ ने जो प्रयास किया, उसमें उनके हाथ से दूसरा अंडा भी गिरकर टूट गया । वस्तुतः दूसरे अंडे को बिल्ली की पहुँच से दूर करने के लिए वह स्टूल पर चढ़कर उसे सुरक्षित रखने की कोशिश में लगी थी । तभी वह हाथ से छूट गया था । लेखक की माँ को इस बात से बहुत दुख हुआ । कबूतर परेशानी में इसलिए फड़फड़ा रहे थे कि उनके दोनों अंडे टूट गए थे । इसके प्रायश्चित में माँ ने पूरे दिन का रोज़ा रखा । दिन भर माँ ने न कुछ खाया, न पानी पीया । सिर्फ़ रोती रही और बार-बार नमाज़ पढ़-पढ़कर वह दिन भर ख़ुदा से अपनी ग़लती की माफ़ी माँगती रही ।

10. "जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही कम गुस्सा आता है । परंतु आता है तो रोकना मुश्किल हो जाता है ।" - आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - यह समुद्र के बारे में कहा गया है । कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर्स समुद्र को पीछे धकेल कर उसकी ज़मीन को हथिया रहे थे । बेचारा समुद्र लगातार सिमटता जा रहा था । पहले उसने अपनी फैली हुई टाँगें समेटीं, थोड़ा सिमट कर बैठ गया । फिर जगह कम पड़ी, तो उकड़ूँ बैठ गया । फिर खड़ा हो गया । जब खड़े रहने की जगह कम पड़ी, तो समुद्र की सहनशक्ति ने जवाब दे दिया ।

समुद्र के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले मुंबई में देखने को मिला था । यह इतना डरावना था कि मुंबई निवासी अपने-अपने पूजा-स्थलों में अपने-अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे । समुद्र ने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया । एक वर्ली के समंदर के किनारे पर जा गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह गिरा और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर टूटकर सैलानियों का नज़ारा बना । लाख कोशिश के बावजूद भी वे फिर चलने के क़ाबिल नहीं हो सके । लेखक ने इस कथन के द्वारा यह कहने का प्रयास किया है कि हमें प्रकृति को बचाने का प्रयास करना चाहिए ।

11. 'धरती कैसे वजूद में आई?' पृथ्वी के निर्माण के बारे में किसी एक वैज्ञानिक तर्क का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर - 'धरती कैसे वजूद में आई?' - इस पर समाज में प्रचलित विज्ञान पर आधारित तथ्य यह है कि करोड़ों वर्ष पहले विशाल आकाशीय पिंड में एक भयंकर विस्फोट हुआ था, जिसके एक हिस्से से हमारी पृथ्वी का जन्म हुआ । धीरे-धीरे यह हिस्सा ठंडा हुआ और इस पर जीवन के अनुकूल दशा बननी आरंभ हुई ।